इकाई 26 प्रतिक्रांति-I : फासीवाद से अनुदार तानाशाही तक

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य यूरोप में दो विश्व युद्धों के बीच अति दक्षिणपंथी आंदोलनों और शासन व्यवस्थाओं के विकास की चर्चा करना है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- फासीवाद के कुछ सामान्य लक्षण और इसके संगठन की प्रवृत्ति को जान सकेंगे,
- यूरोप में विभिन्न देशों में फासीवाद के वैचारिक स्वरूपों और संगठनात्मक शैली का परिचय प्राप्त कर सकेंगे,
- इटली और स्पेन जैसे देशों में फासीवादी शासन व्यवस्था की प्रकृति को पहचान सकेंगे, और
- समूचे यूरोप में अर्धफासीवादी शासन व्यवस्थाओं और संगठनों के फैलाव का विवेचन कर सकेंगे।

26.1 प्रस्तावना

18वीं और 19वीं शताब्दी में चुनावों, दलों और प्रतिनिधियों के जरिए लोगों को संगठित करने की राजनीति को संस्थागत रूप देने का काम शुरू हो चुका था। इसके कारण वामपंथी से लेकर दक्षिणपंथी तक के कई विकल्प सामने आए। दबा हुआ सामाजिक मतभेद भी उभर कर सामने आ गया। 1870 के बाद एकाधिकार पूंजीवाद के विकास और इसके परिणामस्वरूप साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता से उपजे अतिराष्ट्रवादी विचारधाराओं और सैन्यवाद को प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप में दक्षिणपंथी फासीवादी तानाशाही के उदय की पृष्ठभूमि के रूप में देखा जा सकता है। इस नए संदर्भ में कार्य स्थल के बाहर बने नए और गैर वर्गीय

पहचानों को राजनैतिक समर्थन का आधार बनाया गया। इसके परिणामस्वरूप 'युद्ध सैनिक', 'करदाता', 'खेलप्रेमी' या 'राष्ट्रीय नागरिक' जैसी अनेक जनतांत्रिक संस्थाएं निर्मित की गईं।

पिछली इकाई में आपने युद्धोतर काल में यूरोप में जन्मी तीन विचारधाराओं और उनके वामपंथी, दक्षिणपंथी और मध्यमार्गी शासन व्यवस्थाओं का परिचय प्राप्त किया। पिछली इकाई में आपको 'मध्यमार्ग' अर्थात 1920 के दशक में ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी के उदारवादी जनतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं की जानकारी दी गई। इस इकाई में दक्षिणपंथी अर्थात इटली, जर्मनी (1930 और 1940 के दशक के आरंभ में हिटलर के नेतृत्व में) और स्पेन जैसे देशों, फासीवादी आंदोलनों और शासन व्यवस्थाओं पर विचार किया जा रहा है। इस इकाई में सबसे पहले फासीवाद के सामान्य लक्षणों की चर्चा की गई है। इसके बाद इसमें जर्मनी के अलावा अन्य देशों के संदर्भ में फासीवाद की चर्चा की गई है। जर्मनी पर अगली इकाई में अलग से चर्चा की जाएगी।

26.2. फासीवाद के सामान्य लक्षण

फासीवाद की व्याख्या कई रूपों में की जाती है। इसकी कुछ महत्वपूर्ण व्याख्याएं इस प्रकार हैं :

- मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार वित्तीय पूंजीवाद का एक हिंसक, तानाशाही एजेंट
- मध्यमार्गीय सुधारवाद की एक अनूठी अभिव्यक्ति;
- सांस्कृतिक और नैतिक गिरावट का प्रतिफलन;
- एक प्रकार के मानसिक असंतुलन और विकृति का परिणाम;
- पारिवारिक संबंधों, चर्च, श्रेणि और निवास स्थान आदि परम्परागत पहचानों के टूटने पर बेढंगे जनसमूह के उदय का प्रतिफलन; और
- बोनापार्टवाद का एक रूप या किसी खास वर्ग के प्रभुत्व से स्वतंत्र स्वायत्त सत्तावादी सरकार।

इस सूची में और भी कई बातें जोड़ी जा सकती हैं परंतु इन अलग-अलग व्याख्याओं से यह पता चल जाता है कि फासीवाद के अनेक चेहरे होते हैं। यूरोप में फासीवाद का उदय समग्र राष्ट्रवाद (अन्य सभी प्रकार के मानवीय पहचानों को पीछे छोड़ते हुए राष्ट्र की सौहार्द्रपूर्ण सामूहिकता में विश्वास) और गैर मार्क्सवादी समाजवाद के मिलन से हुआ। इस समग्र राष्ट्रवाद में साम्यवाद, संसद, लीग ऑफ नेशन्स, वित्तीय पूंज़ी और बहुराष्ट्रीय यहूदी समुदाय जैसे अन्तरराष्ट्रीय संगठनों और आंदोलनों तथा अन्तर-राष्ट्रवाद के प्रति गहरा वैमनस्य भाव था। फासीवाद का उदय एक ऐसे सुधारवादी आंदोलन के रूप में हुआ जिसमें उदारवाद, प्रजातंत्र और मार्क्सवाद जैसी अवधारणाओं को अस्वीकार किया गया। फासीवादी विचारधारा ने बौद्धिक जागरण से प्राप्त राजनैतिक संस्कृति और इसकी विचारधाराओं जैसे तर्कसंगत भौतिकवाद, व्यक्तिवाद और बहुल स्वायत्तता जैसे सिद्धांतों को नकार दिया। फासीवाद के अन्य सांस्कृतिक चेहरे सक्रियतावाद, जैवशक्तिवाद और सामाजिक-डार्विनवाद के रूप में उभर कर आते हैं। सोरेल का कार्य-दर्शन अन्तर्ज्ञान, ऊर्जा और जीवन शक्ति पर आधारित था। इसके सक्रियतावाद का उपयोग जनसमुदाय को संगठित करने के लिए किया जाता था। सामाजिक डार्विनवाद का मानना था कि समाज में लोग जीने के लिए आपस में संघर्ष करते हैं और इसमें श्रेष्ठ समूहों और नस्लों की जीत होती है।

फासीवाद का मूल 19वीं शताब्दी में उदारवादी प्रजातंत्र, संसदीय प्रणाली और मार्क्सवादी समाजवाद की आलोचनाओं में ढूंढा जा सकता है। हालांकि इनके विचार अनुदार सत्तवादी समूहों से अलग थे। सामान्य तौर पर धार्मिक विचारधारा अनुदार सत्तावाद का आधार थी जबकि फासीवाद जैवशक्तिवाद, गैर तर्कसंगतता या धर्मनिरपेक्ष नव-आदर्शवाद जैसे नए सांस्कृतिक दर्शनों पर आधारित था। अनुदारवादियों ने जहां परम्परागत विरासत का सहारा लिया वहीं फासीवादियों ने सुधारवादी संस्थागत परिवर्तन का आह्वान किया।

युद्ध से पैदा हुई सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों से फासीवाद को ठोस रूप ग्रहण करने में मदद मिली। इसने जनता और आर्थिक संसाधनों को जुटाने में राष्ट्रवाद की क्षमता को उजागर किया। इसने आधुनिक राज्य में आदेश, प्राधिकार, नैतिक समर्थन और अधिप्रचार के महत्व को प्रदर्शित किया। युद्ध के बाद, फासीवाद एक समान और एक सूत्र में बंधे लोगों की दृष्टि के रूप में उदित हुआ, जिन्हें सामुदायिक उपासना गीतों और मशाल जुलूसों के जरिए एकजुट किया गया और इसमें सम्प्रदाय विशेष की शारीरिक

शक्ति, हिंसा और क्रूरता को उजागर किया गया। ड्यूस (इटली) और फ्यूहरर (जर्मनी) के रूप में नेता को कमोबेश एक धार्मिक और पवित्र व्यक्तित्व मान लिया गया। जनतांत्रिक-बुर्जुआ संस्थाओं और मूल्यों का विरोध करने के बावजूद फासीवादी जनता के उपयोग, जनमंत और उनके द्वारा अपनाए गए राजनीति के तरीकों का इस्तेमाल करने में नहीं हिचके; परंतु वे समाज में बहुलता के सम्मान, व्यक्ति की स्वतंत्रता और नागरिक तथा राजनैतिक स्वतंत्रताओं पर आधारित प्रजातंत्र का विरोध करते थे। उन्होंने राजनीति का सैन्यीकरण कर और सैन्य प्रतीकों और शब्दावली का इस्तेमाल कर जनता को अपनी ओर आकृष्ट किया। राष्ट्रवाद की भावना उभारने और लगातार संघर्ष करने के साथ-साथ विरोधियों का सफाया करने के लिए पार्टी सेना का अक्सर उपयोग किया जाता था। अपने समर्थकों के साथ राजनैतिक संबंधों के सैन्यकरण के क्रम में खासतौर पर पौरुष शक्ति को महत्व दिया गया और इसे समाज के एक समग्र के दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया गया। समग्र समाज संबंधी उनके इस दृष्टिकोण के अनुसार समाज के विभिन्न अंगों के आपसी संरचनात्मक संबंध केवल उनकी भूमिकाओं को परिभाषित और असीमित करते हैं और इसमें व्यक्तिगत पहचान और अधिकारों की भूमिका नगण्य होती है। युवाओं का उत्तेजक आह्वान और सत्तावाद, करिश्मा, नेतृत्व की व्यक्तिगत शैली (ऐच्छिक या अनैच्छिक) की खास प्रवृत्ति राजनीति के सैन्यकरण से जुड़े कुछ अन्य महत्वपूर्ण लक्षण थे।

चित्र 1: फ्यूहरर और ड्यूसः हिटलर और मुसोलिनी, फासीवादी नेता

एक प्रकार का नियमित, बहु-वर्गीय, समन्वित राष्ट्रीय आर्थिक ढांचा (जिसे राष्ट्रीय संघ, राष्ट्रीय समाजवादी या राष्ट्रीय सिंडिकेटिस्ट के विविध नामों से जाना जाता था) भी फासीवादी दर्शन का एक अन्य महत्वपूर्ण लक्षण था। साम्राज्य का लक्ष्य या कम से कम अन्य ताकतों के साथ राष्ट्र के संबंधों में मूलभूत बदलाव भी एक निर्णायक कारक था।

26.3 फासीवादी की राजनैतिक पृष्ठभूमि

फासीवादी विचारों की शुरुआत 19वीं शताब्दी के अन्त और 20वीं शताब्दी के आरंभ से मानी जा सकती है। सामूहिकता के विचार (लोगों के समूह, वर्ग संघर्ष ने मुक्त उत्पादकों के समूह के रूप में) का उदय व्यक्तिवाद, सामाजिक आण्विकरण और नए केंद्रीकृत राज्यों के प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ। आरंभ में यह व्यक्तिगत

आधारों पर बंधे रहस्यात्मक 'समुदाय' की सामंती विचारधारा का अवशेष था। परंतु धीरे-धीरे इसने आधुनिक सुधारवादी, वर्ग-सामूहिकता का रूप धारण कर लिया। सामाजिक सामूहिकता (निगमों या संघों को दी गई स्वायतता पर आधारित) और राज्य सामूहिकता इसके दो विशिष्ट रूप थे। दूसरे स्तर पर अनुदारवाद से नवसत्तावाद की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। ऐक्शन फ्रांसेसे (फ्रांस में इसकी स्थापना 1899 में हुई) इसी नवसत्तावादी, नवराजतंत्रीय राष्ट्रवाद का प्रतिनिधित्व करता था। वैधानिक राजतंत्र और सामूहिक प्रतिनिधित्व इसका केंद्रीय सिद्धांत था। इसने शामी विरोधी और आक्रामक युवा कार्यकर्ताओं (फासीवादी सैन्य संगठन का पूर्व रूप) का भी उपयोग किया।

तीसरी प्रवृत्ति के रूप में फासीवादी अधिकारों को ठोस रूप प्रदान किया गया और उसे आधुनिक सुधारवादी अधिकार के रूप में पेश किया गया जिसमें घरेलू आधुनिकीकरण के साथ-साथ सैन्य राष्ट्रवाद का तत्व भी घुला हुआ था। इतालवी राष्ट्रीय संघ (इटालियन नेशनल एसोसिशन 1910 में स्थापित) इसका एक राजनैतिक स्वरूप था। राज्य सामूहिकता के इसके दर्शन के तहत इटली को एक मजबूत शक्तिशाली देश बनाने के लिए औद्योगिक उत्पादन के संयोजन की जरूरत महसूस की गई और इसकी सेना सेम्प्रे प्रॅान्टी (हमेशा तैयार) ने गुंडागर्दी के बल पर वामपंथी आंदोलन को दबाया।1880 के दशक में फ्रांस में पॉल डेरोलडेज की लीग ऑफ पैट्रोयियोस्टस और फ्रांस में बोलांगिस्ट आंदोलन एक प्रकार से जनता को आकर्षित करने, लोगों में सामूहिक राष्ट्रवाद की भावना भरने और सुधार की बात करने वाली संस्थाएं थीं जिनमें फासीवाद की झलक मिलती थी। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आस्ट्रिआई नेता ज्योर्ज रिटर वोन शेनेरर का अखिल जर्मनीवाद और नस्ली राष्ट्रवाद, चेक राष्ट्र समाजवादी पार्टी (1904) में शामिल मौरिस बैरिस का समाजवादी राष्ट्रवाद (1904) और जर्मन राष्ट्रीय समाजवादी कामगार दल और इसके नेता डॉ. वाल्टर रेल और रुडोल्फ जंग हिटलरवादी विचारों और कार्यक्रमों के बहुत करीब थे।

बोध प्रश्न 1

1) फासीवादी आन्दोलन के विकास में युद्ध का क्या योगदान था ?

....

....

....

....

....

2) फासीवाद के सामान्य लक्षण क्या हैं ?

....

....

....

....

....

3) अनुदार दक्षिणपंथी को आप फासीवादी आंदोलन से कैसे अलग करेंगे ? लगभग 5 पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

26.4 इटली में फासीवादी राज्य की आधारभूमि

अब तक आप फासीवाद के सामान्य लक्षणों से परिचित हो चुके हैं। अब हम कुछ उदाहरणों का अध्ययन करेंगे। जर्मनी, इटली और स्पेन फासीवाद के कुछ उदाहरण हैं। जर्मन फासीवाद पर अगली इकाई में विचार किया जाएगा। यहां हम इटली और स्पेन में जन्मे फासीवाद के चेहरे को पहचानने का प्रयास करेंगे।

26.4.1 फासीवादी आन्दोलन का उदय और सत्ता पर नियंत्रण

इटली में फासीवाद के उदय के लिए कुछ घटनाएं और प्रवृत्तियां जिम्मेदार थीं। युद्ध में इटली की भागीदारी के मुद्दे पर 1914 में रेडिकल सिंडेकेलिस्ट कन्फिडिरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन (अतिवादी मजदूर संघ) में विभाजन हो गया। सिंडेकेलिस्ट 'उत्पादकों' की 'आत्म मुक्ति' में विश्वास रखते थे जो 'राज्य सत्ता की प्राप्ति' के जरिए नहीं बल्कि 'कारखाना स्तर पर नियमन' द्वारा प्राप्त किया जा सकता था। समय आने पर मजदूरों के सिंडिकेट या संघों को राज्य का स्थान लेना था जिन्हें उत्पादकों के आत्म शासन के औजार के रूप में काम करना था। फासीवाद की ओर बढ़े सिंडिकेलिस्टों ने अतिराष्ट्रवाद का अनुगमन किया और उन्होंने राष्ट्र को प्रोलेटेरियन या प्लुटोक्रेटिक (वर्ग संदर्भ में) के रूप में व्याख्यायित किया। भविष्यवाणीवादियों ने परम्परागत रीति रिवाजों और मौजूदा संस्थाओं को अस्वीकार कर दिया था और हिंसा का पक्ष लिया था। वे गति, शक्ति, मोटर और मशीन या सभी प्रकार की आधुनिक प्रौद्योगिकीय संभावनाओं से मुग्ध थे। इनके विचारों का भी काफी प्रभाव पड़ा। मुसोलिनी का नेतृत्व, और उसके जनता को इकट्ठा करने और राष्ट्रीय क्रांति संबंधी समाजवादी विचार और दृष्टिकोण तीसरा प्रमुख कारक था।

फासीवादियों ने आरंभ में मिलान में अपने कार्यक्रम के तहत *फैसाय डी कोमबैटिमेन्टो* (1919) की शुरुआत की जिसने गणतंत्र की स्थापना की मांग की और अतिवादी जनतांत्रिक और समाजवादी परिवर्तन किए जाने की आवाज उठाई। उन्होंने युद्ध के समय पूंजीपतियों द्वारा कमाए गए भारी मुनाफे को जब्त करने, बड़े ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियों को दबाने और भूमिहीन किसानों के लिए जमीन की मांग की। 1920 में इस कार्यक्रम से ये वामपंथी तत्व निकाल दिए गए और केवल भावनात्मक स्तर पर घोर राष्ट्रवाद, युद्ध का औचित्य और राष्ट्रीयता महानता के सरोकारों तथा समाजवादी दल के प्रति विद्वेष जैसी भावनाओं को स्थान दिया। खासकर उत्तरी और मध्य इटली–पो वैली और टसकनी–में फासीवादी दस्तों का जन्म हुआ जिसका नेतृत्व अवकाश प्राप्त सैनिकों ने किया और स्थानीय पुलिस और सेना ने समर्थन दिया। इन दस्तों का निर्माण वामपंथ के वास्तविक या दिखावटी खतरे का सामना करने के लिए किया गया। इन दस्तों को अनुशासित करने के लिए जनवरी 1923 में मुसोलिनी ने स्थानीय दस्तों को अनुशासित करने और इनके नेताओं की शक्तियों पर पाबंदी लगाने के लिए फासीवाद सैन्य दल का निर्माण किया।

रोम में फासीवादियों ने जुलूस का जिस अव्यवस्थित ढंग से संयोजन किया (अक्टूबर 1922) उससे यह पता चलता है कि यदि राज्य में निर्णय लेने की शक्ति होती और उन्हें सेना के एक भाग का मूक समर्थन न मिला होता तो उन्हें सत्ता कभी प्राप्त नहीं होती। 29 अक्टूबर 1922 को राजा ने मुसोलिनी को प्रधानमंत्री नियुक्त किया जिसने सत्ता प्राप्त करने के बाद कुछ दिनों तक संवैधानिक नियमों का पालन किया। हालांकि मुसोलिनी ने यह महसूस किया कि सत्ता में बने रहने के लिए बहुवर्गीय राष्ट्रवादी आंदोलनों को भी दक्षिणपंथी ताकतों से समझौता या साझा करना पड़ेगा। फरवरी 1923 में फासीवादी दल और इतालवी राष्ट्रवादी संघ (नेशनलिस्ट एसोसिएशन ऑफ इटली) का विलयन हो गया। सेना के अधिकारियों, शिक्षाविदों, प्रशासकों और व्यापारियों का व्यापक समर्थन प्राप्त करने के लिए अनुदारवादी, संभ्रांत, राजतंत्रीय दक्षिणपंथी दल के साथ यह विलयन जरूरी था। परम्परागत संभ्रांत वर्ग से समझौता करने की छाप फासीवाद दल और राज्य पर भी पड़ी। 1923 में एसेरबो बिल पारित करने में परम्परागत दक्षिणपंथी समूहों ने फासीवादियों को समर्थन दिया जिसमें यह प्रस्ताव किया गया कि चुनाव में एक चौथाई मत प्राप्त कर लेने पर किसी दल को अपने आप संसद में दो तिहाई बहुमत प्राप्त हो जाएगा।

26.4.2 शासन व्यवस्था का दृढ़ीकरण

ताकत और धोखाधड़ी का इस्तेमाल कर फासीवादियों ने 1924 का चुनाव जीत लिया और 1924 में समाजवादी उप-प्रधान मेटेओट्टी की मृत्यु से उत्पन्न अस्थाई अफरा-तफरी के बाद मुसोलिनी तानाशाही को संस्थागत

रूप देने के काम में लग गया। अक्टूबर 1926 में सभी विरोधी दलों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। अखबारों पर बंधन लगा दिए गए और राज्य की सुरक्षा के लिए सार्वजनिक सुरक्षा कानून (1926) बनाकर व्यक्तिगत स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई। सिंडिकेट कानून (1926) बनाकर उत्पादन के हित में श्रम को राज्य के नियंत्रण में ले लिया गया। कानून बनाकर फासीवादी संघों को समझौते का एकाधिकार दिया गया। अनिवार्य मध्यस्थता के लिए ट्रिब्यूनल बनाए गए और हड़तालों तथा काम रोको जैसे आंदोलनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। फासीवाद दल को भी नौकरशाही के ढांचे में ढाला गया। अक्टूबर 1926 में बनाए गए दल के नए संविधान में सभी शक्तियों का केंद्रीकरण किया गया जिसमें सभी पदों पर नियुक्तियां ऊपर से आरोपित होने का प्रावधान था। 1927 में मुसोलिनी ने दल और राज्य के बीच के संबंध के प्रश्न को सुलझा लिया जिसमें राज्य को वर्चस्व दिया गया। 1926 और 1929 के बीच 60 हजार दस्ता सदस्यों को दल से निष्काषित कर दिया गया और सिंडिकेट के नेता एडमोंडों रोसोनी को 1928 में हटा दिया गया। 1920 और 1930 के दशकों में आरंभिक फासीवाद के उत्पादन और औद्योगीकरण के लक्ष्यों को दरकिनार कर दिया गया और अर्ध सामूहिकता की सिंडिकेलिस्ट परियोजनाओं को औपचारिक रूप से समाप्त किए बिना निजी पूंजी से समझौता कर लिया गया। नियोक्ताओं और कर्मचारियों के 22 नए संयुक्त निगमों की सहायता से 1934 में औपचारिक रूप से 'निगम राज्य' (कॉरपोरेट स्टेट) की स्थापना की गई। परंतु इनके पास आर्थिक निर्णय लेने का वास्तविक अधिकार नहीं था।

मुसोलिनी ने चर्च को भी प्रसन्न करने की कोशिश की। युद्ध के दौरान टूटे हुए चर्चों की मरम्मत करने के लिए बड़ी अनुदान राशियां प्रदान की गईं। 1923 में माध्यमिक विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य बना दिया गया। 1929 में लैटेरन समझौते पर हस्ताक्षर करके रोमन समस्या (रोम और पोप की प्रभुसत्ता का प्रश्न) को अन्तिम रूप से निपटा दिया गया। वैटिकन को संप्रभु राज्य बना दिया गया। 1860 और 1870 में पोप के क्षेत्रों के नुकसान के मुआवजे के तौर पर धन प्रदान किया गया। चर्च के प्रमुख संगठन कैथोलिक ऐक्शन को स्वतंत्रता प्रदान की गई बशर्ते कि वे राजनीति से अलग रहें।

26.4.3 फासीवाद जनसंगठनों के प्रमुख प्रकार

1922 में एक परामर्श संस्था के रूप में फासीवादी महापरिषद की स्थापना की गई जिसे 1928 में राज्य का एक अंग बना दिया गया परंतु निचले स्तर पर काम कर रहे संगठन ज्यादा महत्वपूर्ण थे। फासीवाद दस्तों के बीच से सैन्य दस्ते विकसित किए गए। उन्हें सभी तरह के अस्त्र चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था और इसके केंद्र में पेशेवर सैनिक हुआ करते थे। इस दस्ते के कार्यकर्ताओं को फासीवाद की घुट्टी पिलाई गई और विरोधियों के खिलाफ कार्य करने की प्रेरणा दी गई। बलिला नामक अर्ध सैनिक प्रचारक संस्था में युवा मोर्चा और युवा फासीवादी सम्मिलित हुए। इन संगठनों पर दल का आधिकारिक नियंत्रण था। मजदूरों का फासीवादी संघ एक दूसरा प्रमुख जनसंगठन था। 1925 में गठित ओपेरा नाजीनाले डोपेलवोरो (लोगों के मनोरंजन और आराम करने के साधन और तरीके निर्धारित करने हेतु) की स्थापना लोगों के विचारों को परिवर्तित करने के लिए की गई थी और उसका मुख्य उद्देश्य लोगों के खाली समय को संयोजित करना था। इसके तत्वाधान में स्थानीय क्लब और पुस्तकालय, बार, बिलियर्ड हॉल और खेलकूद के मैदानों से युक्त सुविधाओं वाले कई केंद्र स्थापित किए गए। डोपोलवारो द्वारा सम्मेलनों, नाटकों और फिल्म प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता था, लोगों को घुमाने-फिराने की व्यवस्था की जाती थी और बच्चों के लिए गर्मी की छुट्टियों में सस्ती दर पर यात्रा आयोजित की जाती थी। 1930 के दशक में इटली में ऐसी 20 हजार संस्थाएं थीं।

26.4.4 फासीवादी राज्य की प्रकृति

हालांकि कुछ लोग इसे 'सर्वसत्तात्मक' राज्य की संज्ञा देते हैं परंतु राज्य की सत्ता प्रमुख रूप से संघर्ष के क्षेत्रों तक ही सीमित रही, इसका सम्पूर्ण नियंत्रण स्थापित न हो सका। नाजी जर्मन राज्य के समान इसका रोजमर्रा के कार्यों पर कभी भी नियंत्रण स्थापित न हो सका। नौकरशाही संरचना कभी भी जीवन के सभी क्षेत्रों में हस्तक्षेप करने में सफल नहीं रही। यह एक ऐसी तानाशाही थी जो बहुल या अर्धबहुल व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती थी परंतु यह दार्शनिक दृष्टि से नहीं बल्कि संस्थागत दृष्टि से बहुलवादी थी। बड़े व्यापार, उद्योग, वित्त और यहां तक कि सेना ने भी काफी हद तक अपनी स्वायत्तता कायम कर रखी थी जबकि श्रमिकों के हितों को ज्यादा से ज्यादा नियंत्रित किया गया। प्रशासनिक तंत्र में किसी प्रकार का फेर-बदल

नहीं किया गया। नौकरशाही को कभी भी व्यवस्थित रूप से बदलने की कोशिश नहीं की गई और पहले की तरह इस पर पेशेवर अधिकारियों का वर्चस्व रहा। इसी प्रकार पुलिस और कार्बिनियेरी का भी राजनैतिकरण नहीं हुआ अर्थात उस पर दलीय पदाधिकारियों का कब्जा नहीं हुआ; हालांकि 1932 में ओवरा (OVRA) नामक नई राजनैतिक पुलिस का गठन हुआ। फासीवाद ने सत्ता हस्तगत करने के क्रम में स्थापित संस्थाओं और संभ्रांत लोगों से समझौता किया और कभी भी इस समझौते की सीमाओं से पूरी तरह उबर नहीं सका।

इस शासन के आंरभिक काल में देश के आर्थिक जीवन में राज्य का हस्तक्षेप न्यूनतम था। मंदी के दौरान प्रत्यक्ष राज्य निवेश मात्र एक आपातकालीन उपाय था। 1933 में आई.आर.आई (*इंस्टीच्यूट फॉर इन्डस्ट्रीयल रिकंस्ट्रक्शन*) और आई.एम.आई (*इंस्टीच्यूटो मोबिलियेर इटीलियानो*) की स्थापना के बाद राज्य का हस्तक्षेप बढ़ा। परंतु यहां तक कि 1940 में भी आई.आर.आई के पास इटली के उद्योग की समस्त पूंजी का लगभग 17.8 प्रतिशत पूंजी ही थी। राज्य ने मुख्य रूप से रासायनिक, विद्युत और मशीन उद्योग को बढ़ावा दिया और रेलवे के बिजलीकरण तथा टेलीफोन और रेडियो उद्योग को बढ़ावा देकर आधुनिकीकरण पर बल दिया। हालांकि इटली के फासीवादियों ने यह घोषणा कर रखी थी कि इटली निरंतर युद्ध की स्थिति में है परंतु इसमें आर्थिक सैन्यवाद देखने को नहीं मिलता है अर्थात सैन्य उत्पादन में अधिकांश निवेश नहीं हुआ था। इसके अलावा इटली में मानववादी बौद्धिक वर्ग का वर्चस्व बना रहा और तकनीकी विशेषज्ञों की तुलना में उनका महत्व खत्म नहीं हुआ।

1930 के दशक में फासीवादी राज्य ने मजदूरों के लिए कुछ कल्याणकारी योजनाएं भी शामिल कीं। 40 घंटे के कार्य सप्ताह की शुरुआत से आय में आई कमी की कुछ हद तक क्षतिपूर्ति के लिए 1934 में परिवार भत्ता प्रदान किया गया। मजदूरी के अन्तर्गत बीमारी और दुर्घटना के लिए बीमा की भी व्यवस्था की गई और 1930 के दशक के उत्तरार्द्ध में क्रिसमस बोनस और छुट्‌टी वेतन की व्यवस्था की गई।

इतालवी राज्य में कम से कम 1937 तक नस्लवादी शामी विरोधी नीति शामिल नहीं थी। वहां लगभग 45,000 यहूदी परिवार अमन-चैन से रहते थे। यहां तक कि 1938 में दल में 10,125 यहूदी सदस्य थे। हालांकि नवम्बर 1938 में नाजियों के प्रभावस्वरूप नस्ली कानून पारित किए गए जिसके द्वारा यहूदियों से शादी करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया, सार्वजनिक सेवाओं में उन्हें नौकरी नहीं दी जाने लगी, फासीवादी दल का सदस्य नहीं बनाया जाने लगा और उनके पास 50 हेक्टेयर से ज्यादा भूमि नहीं हो सकती थी।

26.4.5 पतन और सैलो गणतंत्र

1943 में मुसोलिनी के शासन को उखाड़ फेंका गया और इसका सामना करने के लिए उसके पास कोई सैनिक तैयारी नहीं थी। इसके बाद पुराने अनुदार दक्षिणपंथियों की एक तदर्थ साझा सरकार बनी जिसमें राजतंत्र, सेना और उच्च समृद्ध वर्ग को प्रतिनिधित्व मिला और इसका नेतृत्व नरम फासीवादी नेताओं ने किया। इस सौलो गणतंत्र में मजदूर परिषदों के लिए कुछ नियम बनाए गए और मुनाफे में उनका हिस्सा तय किया गया तथा उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करने का प्रयास किया परंतु यह सुधारवाद एक मरते हुए तंत्र का अंतिम प्रयास था।

बोध प्रश्न 2

1) इटली में फासीवाद के उदय के लिए उत्तरदायी दार्शनिक विचारों का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

2) मुसोलिनी द्वारा सत्ता प्राप्त करने के बाद फासीवादी राज्य की प्रकृति में कैसे बदलाव आया ?

....

....

....

....

....

3) जर्मनी से इटली का फासीवाद किन अर्थों में भिन्न था ?

....

....

....

....

....

26.5 स्पेन में दक्षिणपंथी तानाशाही और आंदोलन

स्पेन में 1923-30 के बीच जेनरल मिगुएल प्राइमो डी रिवेरा ने सर्वसत्तात्मक सरकार के प्रथम चरण की नींव रखी। इसका उदय जनतांत्रिक सुधारों के लिए समाजवादी दबाव के जवाब में सैन्य प्रतिकिया के रूप में हुआ। इसके अलावा मोरोक्को के सैनिक अभियान में आबिद-अल-करीम रिफियन विद्रोहियों ने स्पेन की सेना को तितर-बितर कर दिया था और उसके नौ हजार सैनिक मारे गए थे। स्पेन की संसद अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद इस सैनिक अभियान की असफलता का 'उत्तरदायित्व' तय करने में असफल रही थी। आरंभ में स्पेनिश संसद को समाप्त करने को एक स्थाई कदम के रूप में देखा जा रहा था परंतु धीरे-धीरे तानाशाही संस्थागत रूप लेने लगी। इस तानाशाही को कुछ लोग 'ऊपर से आरोपित फासीवाद' कहते हैं। यह फासीवाद आर्थिक राष्ट्रवाद, संरक्षणवाद और 'सामाजिक अव्यवस्था' को रोकने के लिए एक 'मजबूत' और 'पदानुक्रमिक' कार्यकारी की मांग पर आधारित था और इसमें ऊपर से ही लोगों को संगठित करने का प्रयास किया गया। यह खासतौर पर एनारको-सिंडिकेलिस्ट लेबर यूनियन,मजदूरों की राष्ट्रीय फैडरेशन (सी.एन.टी) और सोसिएलिस्ट यूनियन यू.जी.टी (यूनियन जेनरल डे ट्राबाजाडोर्स) का विरोधी था। तानाशाह ने लोकप्रिय संगठन को नियंत्रित करने के लिए एक यूनियन पेट्रोटिका पार्टी बनाई। यह दल उग्र कैथोलिक दर्शन पर आधारित था और इसमें कृषीय हितों को समर्थन दिया गया था। रिवेरा ने सोमाटेन को एक संस्थागत रूप दिया जो एक परम्परागत कैटेलन सैन्य दल था जिसने संकट और हड़तालों के दौरान पूंजीवादियों की रक्षा की। परंतु इस नए सैन्य दल पर कानून व्यवस्था लागू करने के लिए सरकारी अधिकारियों का ही नियंत्रण था और कभी भी यह सुधारवादी, फासीवाद सैन्य दल का दर्जा प्राप्त न कर सका।

रिवेरा की तानाशाही की समाप्ति के बाद जनतंत्र का एक नया चरण आरंभ हुआ और स्पेन की राजनीति में वामपंथी और दक्षिणपंथी दोनों ही दिशाओं में सुधार हुआ। 1933-36 के दौरान कॉनफेडरेशन ऑफ स्पेनिश राइट्स ग्रुप या सेडा प्रमुख अनुदार सर्वसत्तात्मक दल था। इसके युवा आन्दोलन (जे.ए.पी) में फासीवाद की कुछ प्रवृत्ति थी परंतु यह दोनों कार्टलिस्ट और अल्फोनसिनो मोनार्किस्ट दक्षिणपंथी सुधारवाद के दूसरे पक्ष का नेतृत्व करते थे। अल्फोनसिनो नव राजतंत्री फ्रांसीसी दक्षिणपंथी समूह होने के साथ-साथ इतालवी फासीवाद का दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी दल था। उनकी पत्रिका *एसिओन स्पेनोला* और उनके प्रमुख विचारक जोसे काल्वो सोटेलो परम्परागत संभ्रांत सेना, भूमिपतियों, चर्च आदि की सहायता से एक सर्वसत्तात्मक तानाशाही राज्य स्थापित करने का विचार प्रस्तुत कर रहे थे। हितों का प्रतिनिधित्व [illegible] एक अप्रत्यक्ष कॉरपोरेट चैम्बर की स्थापना करना चाहते थे। बाद में फ्रैंको शासन के दौरान सोटेलो के विचारों को संरचनागत और नीतिगत रूप दिया गया।

स्पेन की राजनीति में सीधे-सीधे तौर पर फासीवाद की [illegible] वाले समूह [illegible] 1931

और 1934 के बीच विद्यार्थियों के एक छोटे से समूह ने *जनतास डे ऑफेन्सिवा नेशनल सिंडिकेलिस्ट* (जोन्स) का संगठन किया। उनके कार्यक्रम में इटली के फासीवाद की झलक मिलती थी।

अक्टूबर 1933 में राष्ट्रीय सर्वसत्तात्मक आंदोलन को रूप और सैद्धांतिक आधार प्रदान करने के लिए जोसे एंटोनियो प्राइमो डे रिवेरा ने बास्क व्यापारियों से प्राप्त वित्तीय मदद से *फैलेन्जे एस्पेनोला* (या स्पेनिश फैनेक्स या जत्था) की स्थापना की। 1934 के आंरभ में जोन्स का फैलेन्ज में विलयन हो गया। हालांकि राजनैतिक दृष्टि से इसका कोई महत्व नहीं था और यह मुख्य रूप से विद्यार्थियों पर ही निर्भर था क्योंकि इसे निम्न या मध्य वर्ग का समर्थन प्राप्त नहीं था। 1935 तक इसने राष्ट्रीय श्रमिक संघवाद का अधिक परिवर्तनवादी रूप अपना लिया और इटली के फासीवाद की पूंजीवादी और संकीर्णतावादी कहकर आलोचना की। फैलेन्जे ने राष्ट्रवादी दर्शन की वकालत की, वे 'सत्ता, पदानुक्रम और व्यवस्था' में विश्वास रखते थे और उनके 27 सूत्रीय कार्यक्रम में राष्ट्रीय-श्रमिक संघवादी राज्य का विकास, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, ऋण सुविधाएं और बड़े भूमिपतियों की जमीनों को कब्जे में लेना शामिल था। उनके कार्यक्रमें में इतालवी फासीवादियों के सुधारवादी कार्यक्रमों की झलक मिलती थी। राजनैतिक स्तर पर धर्म विरोधी होने के बावजूद फेलेंजवाद की कैथोलिक धार्मिक पहचान ही बनी रही। स्पैनिश दक्षिणपंथियों के अधिकांश हिस्से फासीवादी हो गए परंतु यह फैलेन्ज जन समर्थन प्राप्त करने में असफल रहा। 1936 के चुनाव में इसे मात्र 44,000 या कुल वोटों का 0.7 प्रतिशत मत ही प्राप्त हुए। एकीकृत स्पैनिश राष्ट्र-राज्य के खिलाफ कैटोलन्स बास्को के तीव्र क्षेत्रीय राष्ट्रवाद (या उप-राष्ट्रवाद) के कारण भी अंशत: स्पेन में उग्रवादी राष्ट्रवादी दर्शन असफल रहा। इसके अलावा स्पैनिश गृह युद्ध (1936-1939) के दौरान क्रांतिकारी-प्रतिक्रांतिकारी संघर्ष का ध्रुवीकरण हो गया जिसमें नेतृत्व पूर्णत: क्रांतिकारी राष्ट्रीय सेना के पास चला गया जिसने फ्रैंको शासन की स्थापना की और फैलेन्जे सैनिक तानाशाही के अधीनस्थ हो गया। 1937 में फ्रैंको ने फैलेन्जे आंदोलन को अपने हाथ में ले लिया और फैलेन्जवाद के आधार पर एक समन्वयवादी बहुजन राज्य दल की स्थापना की। इस नए दल में फैलेन्जवादी कैलिस्ट और विभिन्न प्रकार के दक्षिणपंथी सदस्य और जो भी इसमें शामिल होना चाहते थे उन सभी को मिलाकर एक नया दल बनाया गया। फैलेन्ज कार्यक्रम को सरकारी दर्जा प्रदान किया गया परंतु भविष्य की जरूरतों के अनुसार इसमें सुधार किया जाता रहा। इस नए तानाशाही फ्रैंकोवाद राज्य में पुराने फैलेन्जवादियों द्वारा बहुत थोड़ी सी भूमिका अदा की गई और यहां तक कि नए राज्य दल *फैलेन्ज स्पेनोला टैडिशियोनलिस्टा* के प्रशासन में भी उनकी भूमिका नगण्य रही। आरंभिक फ्रैंकविज्म (फ्रैंकोवाद) में फासीवाद के प्रमुख तत्व मौजूद थे परंतु दक्षिणपंथी, प्रेटोरियन, कैथोलिक और अर्ध-बहुल संरचना के बीच यह इस तरह प्रतिबंधित था कि इसे 'अर्ध फासीवाद' वर्ग में रखना ही संभवत: अधिक सही होगा। फ्रैंकविज्म की तुलना इतालवी फासीवाद से की जा सकती है जहां इसने राज्य फासीवाद दल का उपयोग किया और एक सीमित दायरे में कार्यकारी तानाशाही स्थापित की। 1945 तक एक अंशत: संगठित अर्ध-फासीवादी राज्य के स्थान पर एक गैर 'संगठित नौकरशाही' सर्वसत्तात्मक शासन की स्थापना हुई।

26.6 फ्रांसीसी दक्षिणपंथी और वीशी सरकार

फ्रांस में कई फासीवाद समूह थे परंतु इनमें से कोई भी दो प्रतिशत से ज्यादा मत हासिल करने में सफल नहीं हो सका, जो फ्रांसीसी मतदान व्यवस्था में प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए न्यूनतम शर्त थी। 1899 में स्थापित फ्रांसीसी ऐक्शन फ्रांसेसे एक प्रकार से फासीवादी प्रतिक्रियावादी आन्दोलन का आरंभिक रूप था। *ज्योर्ज वल्वा ला फैसो* (1925 में स्थापित) ने श्रमिक संघवाद और राष्ट्रवाद को एक साथ मिलाने की कोशिश की। मैट्रियाटिक यूथ या देशभक्त युवा (1924-1928) भी सैन्य पद्धति पर संगठित था और दंगे फसादों में विश्वास रखता था। कुछ अन्य समूहों ने व्यापक आधार भी अपनाया। *फ्रेंचसोलिडैरिटी* (1933) और *क्रौस ऑफ फायर* ऐसे ही समूह थे। कॉक्स डे फे को बड़े व्यपार और वित्त का समर्थन प्राप्त था। राजनैतिक तौर पर इसका झुकाव कैथोलिक संकीर्णतावाद की ओर था। 1936 में पोपुलर फ्रंट सरकार (लोकप्रिय मोर्चा) द्वार प्रतिबंधित किए जाने के बाद शीघ्र ही यह फ्रांसीसी सोशल पार्टी के रूप में पुन: संगठित हुआ। 1933 में मार्सेल बकार्ड द्वारा संगठित फ्रांसेस्टेस एक दूसरा दक्षिणपंथी समूह था।

पूर्व साम्यवादी जैक्स डोरियेट के नेतृत्व में गठित फ्रेंच पापुलर *पार्टी पोपुलेरे फ्रांसेसे* एक प्रकार से समाजवाद और राष्ट्रवाद का मिलाजुला रूप था। मार्शल डेट, जो समाजवाद से अलग हट चुका था, ने भी राष्ट्रीय नियोजन और उत्पादन ताकतों के एकीकरण की वकालत की। हालांकि जर्मन आधिपत्य के समय डेट फासीवाद

की ओर बढ़ा और उसके *रेजेम्बलेंमेंट नेशनल पेपुलर रैली* (1941) ने फ्रांसीसी फासीवाद की अति वामपंथी शाखा गठित की।

जनतांत्रिक गणतंत्र के लिए समर्पित दलों (समाजवादी, साम्यवादी और सुधारवादी) ने फासीवाद के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बनाया (1934-35)। 1936 में वामपंथियों द्वारा चुनाव में आगे बढ़ने और 1940 तक लोकप्रिय मोर्चा के समर्थन से बनी साझा सरकार के गठन के बाद वास्तविक या कल्पित फासीवादियों द्वारा सत्ता पर कब्जा प्राप्त करने का खतरा कम हो गया।

वीशी सरकार

फ्रांस के युद्ध में फ्रांसीसी सेना के बुरी तरह पराजित होने से युद्ध विराम की मांग उठने लगी। इस युद्ध में फ्रांस के 92,000 सैनिक मारे गए थे, 18,50,000 सैनिक जर्मन सेना द्वारा बंदी बना लिए गए थे। इसके बाद ही उप-प्रधानमंत्री मार्शल पेटेन और नए सेनाध्यक्ष वेगांड ने फ्रांस के शस्त्रीकरण की मांग की। फ्रांस के प्रधानमंत्री पॉल रेनो ने 16 जून 1940 को इस्तीफा दे दिया और मार्शल पेटेन ने युद्ध विराम की शर्तें तैयार की जिसके तहत फ्रांस की सेना में सैनिकों की संख्या घटाकर 1,00,000 कर देनी थी जिनका काम केवल कानून व्यवस्था की देख रेख करना था। इसके अन्तर्गत होम फ्लीट को विगठित किया जाना था, फ्रांस के अधिकांश हिस्सों पर जर्मनी का आधिपत्य होना था, आधिपत्य का खर्च भी फ्रांस को उठाना था और अन्तिम शांति समझौता होने तक फ्रांस के कैदियों को बंधक के रूप में रखा जाना था। मार्शल पेटेन ने 1 जुलाई 1940 को वाइशी के एस्पा शहर के सीलन भरे और असुविधाजनक होटल के बंद कमरे में अपनी सरकार बनाई। एक पराजित नेशनल एसेम्बली को नया संविधान बनाने का अधिकार दिया गया और मार्शल को 'पूर्णकार्यकारी और विधाई शक्तियां' प्रदान कीं। पेटेन के दृष्टिकोण को 'कार्य,परिवार और मातृभूमि' (फ्रांसीसी भाषा में तैवाई, फैमि और पात्ती) के रूप में देखा जा सकता है जो गणतंत्रवादियों के स्वतंत्रता, बंधुत्व और समानता का ही पर्याय था। वीशी सरकार सामाजिक पदानुक्रम और व्यवस्था को कायम रखने वाले इच्छुक 'संकीर्णतावादी संभ्रांत समूहों' का प्रतिनिधित्व करती थी। फासीवाद की अपेक्षा ऐक्शन फ्रांसेसे जैसे आंदोलनों से जुड़ा परम्परावाद इस सरकार की प्रमुख विशेषता थी। वीशी सरकार ने सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए नैतिक निर्देश जारी किए। घरेलू महिलाओं और माताओं की भूमिका को महिमा मंडित किया गया और घर से बाहर निकलकर काम करने वाली महिलाओं को हतोत्साहित करने का प्रयास किया गया। इसके परिणामस्वरूप इस शासन व्यवस्था को धर्म (धार्मिक गुरूओं) का व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ। अर्थव्यवस्था का उपयोग जर्मन हित में किया जाने लगा। 1943 तक कृषि उत्पाद का 15 प्रतिशत और औद्योगिक उत्पादन का 40 प्रतिशत आधिपत्य शुल्क के रूप में जर्मनी को निर्यात किया जाने लगा। उत्पादकों के आत्म नियमन के लिए दिसम्बर 1940 में स्थापित कृषि निगम तेजी से नौकरशाही तंत्र में बदलने लगा और व्यापार में सरकारी हस्तक्षेप बढ़ गया। उद्योग में भी जर्मनों की बढ़ती मांग के लिए योजना बनाई गई जिसमें युद्ध के बाद तकनीकी तंत्र के विकास को बढ़ावा मिला। व्यापारियों को फायदा पहुंचाने के लिए बनाई गई नीतियों को राष्ट्रभक्ति और सामूहिकता का जामा पहनाया गया। मजदूर संघों पर प्रतिबंध लगा दिया गया और सभी प्रकार के मजदूर संघों को क्रूरता से दबा दिया गया। स्थानीय स्तर पर निर्वाचित परिषदों के स्थान पर मेयरों की नियुक्ति की गई। व्यापक नागरिक सेवा के बल पर जनता और वीशी सरकार के बीच समझौता करने का प्रयास किया गया। इससे गैर निर्वाचित सामाजिक और प्रशासनिक संभ्रांत वर्ग का प्रभाव बढ़ा और नौकरशाही और निगमों के द्वारा इन्होंने अपना नियंत्रण बढ़ाया।

इस समर्थन के बदले वीशी ने उनसे युद्ध विराम की शर्तों पर और अनुकूल शांति समझौता किया था। हालांकि 1942 में अनाधिपत्य वाले क्षेत्र में जर्मनों के प्रवेश से वीशी की स्थिति एक परावलंबी उपग्रह के समान हो गई। आरंभ में कुछ ही फासीवादी सरकार के साथ जुड़े हुए थे। दिसम्बर 1943 में मार्शल डेट और जोसेफ डार्नेड को मंत्री बनाया गया।

वीशी का शामी विरोध नस्लवाद की अपेक्षा राष्ट्रवादी और कैथोलिक अधिक था। युद्ध विराम के तहत वीशी सरकार को जर्मन मूल के यहूदी शरणार्थियों को लौटाना पड़ा। अक्टूबर 1940 में एक कानून बनाकर बिजली घरों, नागरिक सेवाओं, अध्यापन और पत्रकारिता में यहूदियों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया और अधिकांश पेशों में उनके लिए कोटा निर्धारित कर दिया गया। हालांकि सैनिकों और पूर्ण रूप से घुले-मिले

यहूदियों को इससे मुक्त रखा गया। वीशी के सहयोग से आधिपत्य क्षेत्र में यहूदियों की सम्पत्ति जब्त कर ली गई और विदेशी यहूदियों को वापस भेज दिया गया। 1941 की ग्रीष्म ऋतु के बाद अनाधिपत्य क्षेत्र में भी नीतियों को लागू कर दिया गया।

जर्मन आधिपत्य और वीशी के सहयोग के खिलाफ धीरे-धीरे विरोध बढ़ा। अगस्त 1942 में जर्मनों द्वारा अनिवार्य श्रम सेवा कार्यक्रम लागू करने से प्रतिरोध की अग्नि और भड़क उठी। लगभग 40,000 विरोधियों को मौत के घाट उतार दिया गया और 60,000 लोगों को यातना शिविरों में भेज दिया गया।

मित्र राष्ट्रों की सेना 6 जून 1944 को नॉर्मेंडी के बन्दरगाह पर उतरी और 25 अगस्त 1944 को पेरिस स्वाधीन हुआ। 1944 के अन्त तक अधिकांश फ्रांस जर्मन आधिपत्य से मुक्त हो गया। जर्मन अधिकारियों ने वीशी सरकार को पूर्वी फ्रांस में जाने के लिए बाध्य किया और अन्तत: उसे स्वयं जर्मनी में ही बंधक बना लिया गया।

26.7 दक्षिणपंथी आंदोलन और तानाशाही : पूर्वी मध्य यूरोप और बाल्टिक राज्य

इटली और स्पेन के अलावा यूरोप के कई देशों में फासीवाद संक्षिप्त राजनैतिक प्रयोग और संगठन के रूप में भी सामने आया। इन सभी संगठनों में फासीवाद के आधारभूत तत्व विद्यमान नहीं थे। फासीवाद की मात्रा और व्यापकता में भी फर्क था। आइए, पोलैंड, हंगरी, बाल्टिक राज्यों और चेक-स्लाव देशों का उदाहरण देखा जाए।

26.7.1 पोलैंड

पोलैंड में फासीवाद आंदोलन कमजोर था। 1926 में पिलसुडस्कि सैनिक विद्रोह द्वारा तख्ता पलटने के परिणामस्वरूप एक मजबूत सर्वसत्तात्मक शासन की स्थापना हुई। 1935 तक यह नरमपंथी अर्ध बहुल व्यवस्था के रूप में काम करता रहा। पश्चिमी पोलैंड की नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी एक जन संसदीय दल था जिसने शामी विरोधी नीति की वकालत की और अन्य राष्ट्रीय अल्प संख्यकों के प्रति अधिक दमनात्मक नीति अपनाई। 1930 के दशक में इसकी सुधारवादी युवा शाखा राष्ट्रीय सुधारवादियों के रूप में अलग हो गई और ए. वी.सी और फलांगा जैसे दो फासीवादी संगठनों को जन्म दिया। फलांगा की विचारधारा अति कैथोलिकवादी थी और इसने अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र की समाप्ति और एक प्रकार के राष्ट्रीय समाजवाद की स्थापना पर बल दिया।

1935 में एक नये नैगमिक, सर्वसत्तात्मक संविधान का निर्माण हुआ जिसने सहिष्णु बहुलवाद के विस्तार को कम कर दिया। 1935 में पिलसुडस्कि का भी देहांत हो गया और उसके उत्तराधिकारी कर्नल को ने एक नए फासीवादी राज्य दल - द कैम्प ऑफ नेशनल यूनिटी या ओ.जेड. एन - का निर्माण किया। इसका प्रथम निदेशक कर्नल को फलांगा के अध्यक्ष बोलेसलॉ पियासेकी पर काफी निर्भर था और इस संबंध के कारण को को निकाल बाहर किया गया और फलांगा से सारे संबंध तोड़ लिए गए। कुछ लोग इस व्यवस्था को 'निर्देशित जनतंत्र' कहते हैं परंतु 1939 तक यह शासन व्यवस्था संगठित राज्य संगठन और एक नियंत्रित एकदलीय व्यवस्था की ओर बढ़ रही थी।

26.7.2 हंगरी

हंगरी में विभिन्न प्रकार के फासीवाद, फासीवाद प्रकार के, दक्षिणपंथी सुधारवादी और सर्वसत्तात्मक राष्ट्रवादी समूहों का बड़ा जमघट था। साम्यवादी बेलाकुन विद्रोह (1919) के बाद नौकरशाही के बड़े बेरोजगार हिस्से ने फासीवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। दोनों विश्वयुद्धों के बीच हंगरी पर अधिकांशत: एडमिरल होर्थी का संकीर्णवादी सर्वसत्तात्मक शासन कायम रहा। इसने 19वीं शताब्दी के सामाजिक पदानुक्रम को महत्व प्रदान किया और सीमित मताधिकार के आधार पर आधारित प्रतिबंधित संसद द्वारा शासन करता रहा। नेशनल यूनिटी पार्टी सरकारी पार्टी थी। एक फासीवाद समूह 'सेजेड फासीवाद' का नेतृत्व गियुला गम्बोस के हाथों में था जिसे जनता का समर्थन प्राप्त नहीं था परंतु 1932 में होर्थी ने उसे इस शर्त पर प्रधानमंत्री का पद देना स्वीकार किया कि वह अपने कार्यक्रम को नरम बनाएगा और शामी विरोध छोड़ देगा। उसने सरकारी नेशनल यूनिटी पार्टी में बदलाव लाने और राज्य को राष्ट्रीय समाजवाद की ओर ले जाने की

कोशिश की परंतु 1936 में उसकी मृत्यु हो जाने के कारण यह काम अधूरा रह गया।

फेरेंक जलाशी 'ऐरो कॉस' को जनता का अच्छा समर्थन प्राप्त था। यह आंदोलन हंगरी नस्लवाद में विश्वास रखता था और इसने बृहद डैन्यूब - कारपेथियन क्षेत्र को हंगरी में शामिल किए जाने का प्रस्ताव रखा था। परंतु गैर माग्यार लोगों के बहुसंख्यक क्षेत्र (लगभग 80-90 प्रतिशत) को स्वायत्ता देने का भी प्रस्ताव था। इसमें एक अन्तर्विरोध यह था कि सिद्धांत स्तर पर सलासी हिंसा को नकारते थे। उसका आंदोलन शामी विरोधी नहीं था परंतु उनके प्रति उनमें सहानुभूति भी नहीं थी। इसलिए उन्होंने सभी यहूदियों को हंगरी छोड़कर चले जाने की वकालत की थी जिसके तहत बृहत सामूहिकता के हित में बड़े भूमिपतियों और पूंजी को समाप्त करने की घोषणा की थी। 1930 के दशक के उतरार्द्ध में इसे मजदूरों और किसानों का काफी समर्थन प्राप्त था परंतु युद्ध के दौरान इसकी लोकप्रियता में काफी कमी आई। इस आंदोलन पर नाजीवाद का प्रभाव बढ़ा और 1944 में जर्मनों की कठपुतली के रूप में थोड़े समय के लिए इन्होंने सत्ता संभाली।

26.7.3 चेको-स्लोवाक

यहां प्रत्यक्षत: दो फासीवाद संगठन थे : नेशनलिस्ट फासीस्ट कम्यूनिटी (एन.ओ.एफ 1926 में स्थापित) और चेक - नेशनल सोशलिस्ट कैम्प जिसका उदय 1930 के दशक में हुआ। ये दोनों संगठन कमजोर बने रहे क्योंकि मजदूर समाजवाद से चिपके रहे और मध्यवर्ग विभिन्न प्रकार के उदारवाद के प्रभाव में थे। युद्ध अन्तराल की अवधि में स्लोवाकिया में प्रमुख राजनैतिक ताकत स्लोवाक पीपुल्स पार्टी का अंशत: फासीकरण हुआ। मूलत: यह एक नरमपंथी संकीर्णवादी सर्वसत्तात्मक कैथोलिक लोकवादी राष्ट्रीय पार्टी थी जिसका झुकाव सामूहिकता की ओर था। 1938 के बाद यह नाजीकरण से प्रभावित हुआ था और शामी विरोधी नीतियां अपनाई गईं जिसमें यहूदियों को व्यापार और पेशे से अलग कर दिया गया था। बाद में नाजियों के दबाव में बड़ी संख्या में यहूदियों को पोलैंड से बाहर निकाल दिया गया।

26.7.4 बाल्टिक राज्य

1936 के अंत में घरेलू चुनाव में वामपंथियों को भारी बहुमत प्राप्त कर लेने के बाद सैनिक विद्रोह के द्वारा लिथुआनिया में एक दक्षिणपंथी नरम तानाशाही की स्थापना हुई। 1940 में इसके लुप्त होने तक अन्टानास स्मेटोना राज्य का प्रमुख बना रहा। कुछ हद तक बहुलतावाद को सहन किया गया था। हालांकि 1940 में राज्य एकदलीय शासन व्यवस्था की ओर बढ़ रहा था। राज्य दल नेशनल यूनियन (ताउतनीन काई) को बुद्धिजीवियों और अमीर किसानों का सामाजिक समर्थन प्राप्त हुआ था।

इसके विपरीत 1934 में नरमपंथी ताकतों द्वारा सर्वसत्तावाद को रोकने के लिए लैटविया और स्टोनिया में 'सर्वसत्तात्मक प्रजातंत्र' की अधिक नरमपंथी शासन व्यवस्थाओं की स्थापना की गई थी। स्टोनिआई स्वतंत्रता सेनानियों के दक्षिणपंथी-सुधारवाद के प्रभाव को रोकने के लिए स्टोनिया में किसान दल के नेता कॉन्सटैनटिन पौट्स ने एक अधिक सर्वसत्तात्मक समाज की स्थापना की। लैटविया में एक नए उलामानिस सरकार की स्थापना की गई जो वामपंथियों की विरोधी थी। इसके अलावा यह थन्डर कॉस की भी विरोधी थी जो नाजीवाद से प्रभावित लैटविया का एक फासीवाद जैसा ही दल था। हालांकि राजनैतिक स्तर पर यह जर्मनी का घोर विरोधी था। हालांकि लैटेविया और स्टोनिया दोनों में बहुलतावाद के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई गई और इनमें से कहीं भी एक सुसंगठित तानाशाही का विकास नहीं हुआ।

बोध प्रश्न 3

1) निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं ? (सही कथन के सामने ✓ का और गलत कथन के सामने X गलत का निशान लगाइए)।

क) वीशी सरकार ने स्वतंत्र नीतियां बनाई थी।

ख) फ्रांसीसी दक्षिणपंथी जनतंत्र समर्थन प्राप्त करने में असफल रहे थे।

ग) स्पेन के फासीवादी संगठन-फैलेंजे जनरल फ्रैंको की तानाशाही के पीछे की प्रमुख शक्ति था।

घ) 'ऐरो कॉस' हंगरी का एक प्रमुख फासीवादी आंदोलन था।

2) फेलेंजे की विचारधारा पर पांच पंक्तियां लिखिए।

....

....

....

....

....

3) हंगरी के राजनैतिक जीवन में 'ऐरो क्रॉस' की क्या भूमिका की ? लगभग 100 शब्दों में अपना उत्तर लिखिए।

....

....

....

....

....

26.8 सारांश

इस इकाई में आपने निम्नलिखित पक्षों का अध्ययन किया :

- फासीवाद आंदोलन के आधारभूत लक्षण;
- फासीवाद के लिए सामाजिक और मनोवैज्ञानिक माहौल बनाने में युद्ध की भूमिका, और
- फासीवाद और इसकी संगठनात्मक शैलियों के विकास में आधारभूत विचारधाराओं का योगदान।

फासीवाद और संकीर्णवादी दक्षिणपंथी आन्दोलन समाज और इसकी संस्थाओं को बदलना चाहते थे परंतु इन दोनों में काफी अन्तर था। इस इकाई में हमने फासीवाद के राजनैतिक पूर्व रूपों का भी विवेचन किया। यह कहना सही नहीं होगा कि विश्वव्यापी मंदी के कारण फासीवाद आन्दोलन अचानक ही आ टपका। हालांकि मंदी ने फासीवाद के विकास के लिए आदर्श स्थितियां पैदा की थीं परंतु इसकी जड़ें 19वीं शताब्दी के यूरोप और विश्व युद्ध में निहित थीं। आपने इटली, फ्रांस और स्पेन आदि में भी फासीवादी आन्दोलन के विभिन्न रूपों का अध्ययन भी किया। इटली में फासीवादी शासन व्यवस्था के उदय का विस्तार से विवेचन किया गया और राज्य की प्रकृति पर अलग से विचार किया गया। फ्रांस, स्पेन, पूर्वी मध्य यूरोप (पोलैंड, हंगरी और चेकोस्लोवाकिया) और बाल्टिक राज्यों के उदाहरणों का अध्ययन करने से आपको युद्ध-अन्तराल काल में फासीवादी राजनीति के विकास को समझने में मदद मिलेगी। हालांकि इस इकाई में हिटलर के नेतृत्व में यूरोप-जर्मनी के अति दक्षिणपंथी शासन व्यवस्था का जिक्र नहीं किया गया है। अगली इकाई में जर्मनी में फासीवाद के उदय की कहानी कही गई है।

26.9 शब्दावली

शामी-विरोधी : यहूदियों के खिलाफ पूर्वाग्रह, इसका आधुनिक रूप नस्लवाद और सामाजिक डारविनवाद की विचारधाराओं पर आधारित है।

सामूहिकता/नैगमिक एक अर्द्ध सामूहिकतावाद जिसमें एक संगठन में नियोक्ताओं और कर्मचारियों के बीच सौहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है।

संभ्रांत सामाजिक तौर पर विशेषाधिकार प्राप्त समूह

उदारवादी जनतंत्र : साझा राजनीति का एक राजनैतिक सिद्धांत जिसमें सामाजिक बहुलता और स्वतंत्रता का आदर और आधुनिक ऐच्छिक संस्थाओं का निर्माण किया जाता है।

संगठन : किसी खास विचार के आधार पर लोगों को कार्यवाई के लिए एकजुट करना

राष्ट्रवाद : जनता या समुदाय का अपनी संस्कृति और इतिहास से लगाव और उस पर गर्व।

सामाजिक-डारविनवाद : समाज के विकास में डार्विन के विचारों का उपयोग। इस धारणा के अनुसार समाज में लोग जीने के लिए आपस में प्रतिस्पर्द्धा करते हैं और केवल श्रेष्ठ या मजबूत व्यक्ति, समूह और नस्ल ही विजयी होता है। इस धारणा का उपयोग जर्मनी और अन्य स्थानों पर जन्मे फासीवाद द्वारा यहूदी विरोधी नीतियों के निर्धारण के लिए किया।

समाजवाद : सामुदायिक संसाधनों के सामूहिक स्थायित्व संबंधी राजनैतिक धारणा।

सिंडिकेलिस्म/ श्रमिकसंघवाद : कारखाने में मजदूरों के सिंडिकेट या संघों के जरिए उत्पादकों की आत्म मुक्ति में विश्वास।

26.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 26.2
2) देखिए भाग 26.2
3) आपके उत्तर में फासीवाद के दर्शन की नवीनता और जन संगठन के आधुनिक तरीकों और फासीवादियों द्वारा किए गए संस्थागत बदलाव तथा दक्षिणपंथी संकीर्णतावाद से इनका अंतर स्पष्ट कीजिए। देखिए भाग 26.2

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 26.4.1
2) देखिए उपभाग 26.4.2 और 26.4.4
3) यहूदियों के प्रश्न पर उनके दृष्टिकोणों की तुलना कीजिए। देखिए उपभाग 26.4.4। अगली इकाई भी पढ़िए।

बोध प्रश्न 3

1) (क) (X) (ख) (✓) (ग) (X) (घ) (✓)
2) देखिए भाग 26.5
3) देखिए भाग 26.7, ,खासकर हंगरी के दक्षिणपंथी आन्दोलन वाला हिस्सा।